रहरास साहिब॥

वाहिगुरू जी का खालसा॥ वाहिगुरू जी की फतेह॥

रहरास साहिब, महला ४॥

तिस गुर कौ होइ सेवक आखीऐ॥ सोई साहिब मिलै जे दिसै चंदु लाख वार॥

आदि पुरख आदि पुरखु आदिनामु जुगादिनामु॥

अतुल प्रभु मदनु जुगादिनामु॥ कोई नाही तेरा अपारु॥

सोई गुरू समझिओ हमारे प्रभु अपारु॥

आदि मुरारि तुज बिनु रोसु॥ परमेसरु सिमरि सिमरि तुझ गोसु॥

सरब निधान दुखि जीवन के रस॥ नानक दुखिया सभ संसार नगर नाथ॥

जिनि प्रसादि अगम अगवा॥ तिनी नामि माणिख अराधिआ॥

अवल अकालि मूरति अनाम॥ तेरा जबाबि न जाणै कोइ॥

सरब दा सुखावा॥

तुम ते मोहि जानीऐ सभ अराधि निहाल॥ चरण कमल निरंतरि जाही पूजां निधान॥

नानक दास उपाए चिंतामनि॥ आदि अंति एकै अवतार॥

तुम दातार॥

चारि पहर अरदासि॥ हमरी करो हाथि रखासि॥

पुरन होइ चिति काला॥ तांकि होइ सभी रहिआ समाले॥

आप हथि दै आपे सवारि॥ नानक हरि साजन सुखदाता॥

आसा महला ४॥

आपे ही मिलै समाइऐ॥ आप हि हम चिन्ता बिभुआ थाइऐ॥

दुखु बिनासै सब थाईऐ॥ पूरन होइ जो चिति आईऐ॥

सगल दुख मिटै सुखु पाईऐ॥ आप हि धरि अपुनी दाता॥

आदि अंति पुरखु पाइऐ॥

तुधु बिनु दुजा कोई नाई॥ जो सभी थाइऐ अपारु॥

आदि रूपु अनूपु सरूपु॥ तुम समथु सभु बापु सभु सजगतु॥

तुम ठाकुरु समथु साजन हमारा॥ नानक जन कै प्रभु सद भले सोही॥

जो प्रभु सेवे सोई परम गति पावे॥

रहरास साहिब, दसवा द्वार॥ बाणी गुरु ग्रंथ साहिब जी की॥

देखि परोपकार आगे उघारे॥

वाहिगुरू जी का खालसा॥ वाहिगुरू जी की फतेह॥